<u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

संस्थान के स्थापना दिवस का आयोजन

भाकृअनुप.-केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर में आज 28 सितम्बर 2020 को 27वां स्थापना दिवस मनाया गया। कोविड-19 के दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए यह आयोजन ऑन-लाईन रूप में किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में जोधपुर से ऑनलाईन बोलते हुए इस संस्थान के स्थापक निदेशक **डॉ. ओम प्रकाश पारीक** ने कहा कि बीकानेर के धोरों में बागवानी अनुसंधान कार्य करना बहुत ही चुनौती भरा कार्य था। इस भागीरथ कार्य को पूर्ण करने में हमारे संस्थान के सहयोगी कर्मियों के साथ यहां के कृषि विश्वविद्यालय का भी साथ रहा है। डॉ. पारीक साहब ने इस संस्थान के विकास के लिए नए तकनीकी विकास के कार्यक्रम पर ध्यान केंद्रीत करने की आवश्यकता पर बल दिया। परम्परागत फसलों के साथ अवप्रयोगी फसलों पर कार्य करना भावी रणनीति में समाहित करना चाहिए। खेजड़ी को बागवानी फसलों में शामिल करने की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि यह कार्य अत्यंत ही कठिन था परन्तु सभी के सहयोग से हो गया और आज यह संस्थान खेजड़ी की एक मात्र नई किस्म 'थार शोभा' को जारी करने में सफल रहा। उन्होंने आधारभूत अनुसंधान कार्य करने पर बल दिया। कीट-रोग के रोकथाम पर व्यवस्थित कार्य करने की आवश्यकता बतायी।

विशिष्ठ अतिथि के रूप में बोलते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के सहायक महानिदेशक (बागवानी-।।) **डॉ. ब्रजेश कुमार पान्डे** ने कहा कि विषम परिस्थितियों में काम करने से परिणाम उत्कृष्ट प्राप्त होते हैं। उन्होंने ने भारत सरकार के कृषि राज्यमंत्री के द्वारा इस संस्थान के द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा करते हुए विकास की इस गति को यथावत रखने की बात पर बल दिया। उन्होंने कोविड-19 के संक्रमणकाल में किसानों की मदद के लिए ऑनलाइन तकनीक का सहारा लेने की अपील की। उन्होंने भाकृअनुप की ओर से इस संस्थान का हर संभव सहयोग करने का आश्वासन दिया।

विशिष्ठ अतिथि के रूप में बोलते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के सहायक महानिदेशक (बागवानी-।) **डॉ. विक्रमादित्य पान्डे** ने रेगिस्थान की परिस्थितियों में बागवानी संस्थान की स्थापना अपने आप में बहुत ही कठिन कार्य है। इन सब परिस्थितियेां में भी केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर ने शुष्क बागवानी के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। उन्होंने स्थान विशेष के लिए किस्मों का विकास करने पर बल दिया। शुष्क बागवानी फसलों में पोषक तत्वों की अधिकता की चर्चा करते हुए डॉ पान्डे ने कहा कि पोषण से भरपूर फसलें उगाना आज की आवश्यकता है। संस्थान द्वारा विकसित उत्पादन प्रौद्योगिकियों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि बहुत ही कम समय में कठिन परिश्रम के द्वारा ही इस प्रकार का विकास संभव होता है।

संस्थान के निदेशक **प्रो (डॉ.) पी.एल. सरोज** ने इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में संस्थान के पिछले 27 वर्षों के सफर पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस संस्थान की स्थापना एक राष्ट्रीय केंद्र के रूप में 1993 में बीकानेर की धरती पर हुई थी परन्तु शुष्क बागवानी के महत्व को ध्यान में रखते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् ने इसे अल्प समय में ही केन्द्रीय संस्थान में क्रमोन्नत करते हुए गुजरात स्थित शोध केंद्र को इसके प्रशासनिक कार्यक्षेत्र में शामिल कर दिया तथा बाद में गुजरात के पंचमहल जिले में एक कृषि विज्ञान केन्द्र की भी स्थापना की गयी। अबतक के सफर में संस्थान ने विभिन्न शुष्क बागवानी फसलों की कुल मिलाकर 44 किस्मों का विकास किया है। काचरी, काकड़िया, खेजड़ी, लसोड़ा, चिरौंजी, और खिरनी की किस्मों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि इन फसलों पर विश्व में सबसे पहली किस्में इसी संस्थान द्वारा विकसित की गयी हैं। किसानों के मध्य यह किस्में बहुत लोकप्रिय हैं। इनके बीज और पौध के लिए किसानों की लम्बी कतारें लगती हैं।

ऑनलाईन आयोजित इस कार्यक्रम में पूरे देश से लगभग 300 वैज्ञानिक और विद्यार्थी जुड़े थे। इस स्थापना दिवस के अवसर पर जोबनेर (जयपुर) से कुलपति डॉ. जे.एस. संधु, राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केन्द्र, सोलापूर (महाराष्ट्र) की निदेशक डॉ. ज्योत्सना शर्मा, राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केन्द्र, मुज्जफरपुर (बिहार) से डॉ. विशालनाथ सहित अनके निदेशकों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त अखिल भारतीय शुष्क क्षेत्रीय फल अनुसंधान परियोजना के देशभर पर स्थित केन्द्रों के वैज्ञानिकों सहित बीकानेर स्थिति भाकृअनुप के केन्द्रों के निदेशक, अध्यक्षों, आदि ने भाग लिया।

इस अवसर पर संस्थान के कार्मिकों के मेधावी बच्चों को दसवीं और बारहवीं कक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए प्रमाण पत्र वितरित किए गये। कार्यक्रम के अंत में डॉ. बी. डी. शर्मा, अध्यक्ष, फसल उत्पादन विभाग ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।